भाग - 3

मानव-विज्ञान, धर्म एवं प्रतीक

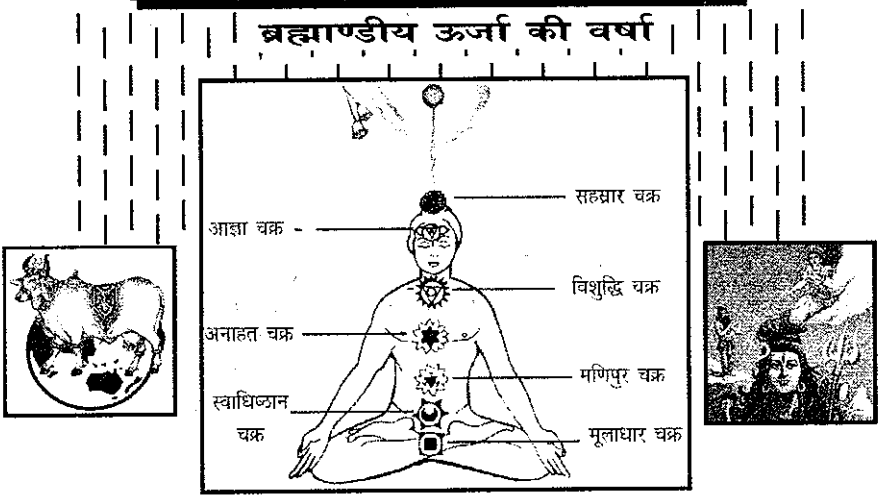

पदार्थ रचना एवं मानव शरीर के निर्माण के सम्बन्ध में विश्व प्रसिद्ध पुस्तक **'THE TAO OF PHYSICS'** के पृष्ठ संख्या 82-83 में विद्वान लेखक द्वारा व्यक्त किए गये विचारों का सारांश :-

परमाणु की नाभि में स्थित धनात्मक विद्युतीय आकर्षण बल तथा एलेक्ट्रॉन के ऋणात्मक बल को विराट में सरलता से अनुभव किया जा सकता है। इस आकर्षण के कारण अनेक पदार्थों के अणुओं की रचना रासायनिक प्रक्रिया द्वारा होती है। यह आकर्षण बल सभी प्रकार के ठोस, तरल एवं गैसीय पदार्थों के निर्माण तथा जीवित प्राणियों की शारीरिक रचना का आधार है।

The basic force, on the other hand, which gives rise to all atomic phenomena is familiar and can be experienced in the macroscopic world. It is the force of electric attraction between the positively charged atomic nucleus and the negatively charged electrons. The interplay of this force with the electron waves gives rise to the tremendous variety of structures and phenomena in our environment. It is responsible for all chemical reactions and for the formation of molecules, that is, of aggregates of several atoms bound to each other by mutual attraction. **The interaction between electrons and atomic nuclei is thus the basis of solids, liquids and gases also of all living organisms and of the biological processes associated with them.**

卐 ॐ 卐

वैदिक ज्ञान के तीन स्वरूप

विश्व के विभिन्न देशों के पास अपनी-अपनी सभ्यताओं एवम् संस्कृतियों के अनुरूप अपना समृद्ध साहित्य है, जिसका सृजन वहाँ के विद्वानों द्वारा किया गया है परन्तु वैदिक साहित्य ही एक मात्र त्रिआयामी हैं । इस लेख में उन्हीं तीन आयामों (स्वरूपों) पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है ।

1. वैदिक साहित्यः- यह साहित्य विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान से परिपूर्ण है । एक-एक क्षेत्र में अनेकानेक खोजें होती रहीं और हर क्षेत्र के ज्ञान में वट-वृक्ष की भाँति इतनी वृद्धि होती रही, कि ज्ञान की शाखा-प्रशाखाएं बनती चली गयीं । इन शाखाओं के हिसाब से योग्य व्यक्तियों द्वारा इनको याद करने की परम्परा बना ली गयी और इस प्रकार वेदी (एक-वेदी) द्विवेदी (दो वेद वाले) त्रिवेदी (तीन वेद वाले) तथा चतुर्वेदी अर्थात् चारों वेद की शाखाओं का ज्ञान रखने वाले विद्वान समाज में उत्पन्न हुए । इन सभी पुरुषार्थी एवम् अध्यवसायी विद्वानों ने परम्परा से यह सारा ज्ञान हम तक पहुँचाने का भरपूर प्रयास किया है । भौतिकता का कम से कम विकास हो तथा मानव आध्यात्मिकता की ओर अधिक से अधिक प्रवृत्त बना रहे, इसीलिए लगता है कि उस काल में न तो छापेखाने और न ही कागज का विकास किया गया था, तथा लिखने-पढ़ने के साधन भी आज की तुलना में लगभग न के बराबर थे, ऐसे में भोजपत्रों पर लिखना अथवा वंश परम्परा से उस विशालकाय ज्ञान को मौखिक रूप से याद करके पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे तक पहुँचाना कितना महती कार्य था । ***वैदिक ज्ञान का सारे का सारा वाङ्मय यदि कोई मानव अपने एक जीवन में पढ़ना और पढ़कर आत्मसात् करना चाहे, तो यह कदाचित् असम्भव ही है ।*** फिर भी समय-समय पर अपने-अपने जीवन के छोटे अथवा बड़े अनुभवों के आधार पर विद्वानों ने बड़ी-बड़ी टीकाएं लिखी हैं और वैदिक ज्ञान को समृद्ध बनाने का अथक प्रयास किया है ।

मेरे विचार से वैदिक ज्ञान को तीन स्वरूपों में देखा जा सकता हैः-

(अ) आध्यात्मिकः- आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी गूढ़ चर्चा, जिसे वेद के अन्तिम खण्ड अर्थात् उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र एवम् गीता में विस्तार से वर्णन किया गया है । यह समृद्ध संस्कृत साहित्य अति प्राचीन गूढ़ साहित्य है, जो सीधा ऋषियों की वाणी से निःसृत है।

(ब) आधिदैविकः- क्योंकि आध्यात्मिक चर्चा बहुत गूढ़ है और जन-साधारण की समझ से परे है, अतएव उन्हीं की माँग पर इस ज्ञान को सरल बनाने के गम्भीर प्रयास किए गये । ***तब प्रतीकों को पूरे वैदिक ज्ञान का आधार बनाया गया तथा रोचक परन्तु मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षाप्रद कथाओं (कहानियों) को गढ़ा गया एवं देवी-देवताओं को पात्र बनाकर साहित्यकारों (पौराणिकों) ने पुराणों की रचना***

की । इस प्रकार के साहित्य से जनमानस को सुरुचिपूर्ण साहित्य सुनने तथा पढ़ने को मिला और वैदिक धर्म को खूब प्रचार भी मिला । एक सहस्त्र वर्षों के दहशत तथा कत्लेआम के साए से गुज़र कर भी यह साहित्य आज हम तक पहुँच ही गया। पौराणिकों की यह विधा बहुत सफल रही । पुराणों में भागवत-पुराण सर्वश्रेष्ठ माना गया, इसीलिए लाखों लोग उसे आज भी बड़े चाव से सुनते हैं ।

(स) आधिभौतिकः- परन्तु आज भौतिक विज्ञान का युग है । जनता को तर्कसम्मत ज्ञान की चाह है । इस रुचि को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के तीसरे आयाम अर्थात् आधिभौतिक स्वरूप को उजागर करने की आवश्यकता का अनुभव करते हुए इस पुस्तक में इसी तरह का एक लघु प्रयास किया गया है । इस व्याख्या को आधुनिक विज्ञान के भौतिक-शास्त्र (Physics), रसायन-शास्त्र (Chemistry), शरीर-रचना-विज्ञान (Anatomy), शरीर-क्रिया-विज्ञान (Physiology), ज्योतिर्विज्ञान (Astronomy) एवम् नभो-भौतिकी (Astrophysics) को आधार बनाया गया है । ऐसा नहीं है, कि इस क्षेत्र में अन्य विद्वानों ने नहीं लिखा है । बहुत लिखा है और अपने-अपने ढंग से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ प्रकार से लिखा है । परन्तु ईश्वरीय प्रेरणा से हर लेखक की अपनी एक खास विधा होती है, जो निश्चित ही अपने आप में कुछ न कुछ दूसरों से भिन्न पहचान लिए होती है । यदि वह कृति मौलिक होती है, तो पाठकों को ग्राह्य होती है तथा इस प्रकार वह उनके ज्ञान में अभिवृद्धि भी करती है ।

2. मानव स्वभाव एवम् इस लेखन का उद्देश्यः- मानव स्वभाव के अनुरूप हर लेखक को अपना लेखन अच्छा ही लगता है, जैसा कि संत तुलसीदास जी ने भी कहा है:-

निज कवित्त केहि लाग न नीका ।
सरस होउ अथवा अति फीका ॥ [a]

(अर्थात् अपनी कविता किस कवि को सुन्दर नहीं लगती, भले ही वह कविता रसीली हो अथवा फीकी हो)

क्योंकि वैदिक ज्ञान की विशालता और गूढ़ता का पार पाना हर एक के वश की बात नहीं है, अतएव इस ज्ञान के बहुत थोड़े से बाहर-बाहर के अंशों को ही छूने भर का यहाँ पर प्रयास किया गया है । संत तुलसीदासजी की निम्न उक्ति यहाँ पर पूरी तरह सटीक बैठती है ।

कवि व होउँ नहिं वचन प्रवीनू, सकल कला सब विद्या हीनू ।
आखर अरथ अलंकृति नाना, छंद प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा, कवित दोष गुन विविध प्रकारा ।
कवित विवेक एक नहिं मोरे, सत्य कहऊँ लिखि कागद कोरे ॥ [b]

---

a & b श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 7- 8 एवम् दो. 8- 9 के मध्य

अर्थ :- मैं न तो कवि हूँ और न ही वाक्य रचना में ही कुशल हूँ, बल्कि सब कलाओं एवम् सभी विद्याओं से रहित हूँ। नाना प्रकार के अक्षर, अर्थ और अलंकार आदि तथा अनेक प्रकार की छन्द रचना, भावों और रसों के अपार भेद और कविता के भाँति-भाँति के गुण-दोष होते हैं। इनमें काव्य सम्बन्धी एक भी बात का ज्ञान मुझमें नहीं है, इस बात को मैं कोरे कागज पर लिख कर सत्य-सत्य (शपथपूर्वक) कहता हूँ।

मेरे लेखों पर कुछ सुप्रसिद्ध विद्वानों ने यह टिप्पणी की थी, कि इनमें लेखन कला का नितान्त अभाव है, सो ठीक भी है, जैसे एक ही बात को अलग-अलग लेखों में बारम्बार दोहराया गया है। उदाहरणार्थ प्रतीकों के बारे में लगभग हर लेख में चर्चा की गयी है, ताकि हर लेख अपने आप में सम्पूर्ण बना रहे और पाठक के लिए सुविधाजनक हो। ऐसी कमियों के रहते हुए भी हठपूर्वक विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत भूतकाल में लिखे गये लेखों को संग्रहित करके उनका संकलन भर कर दिया गया है तथा पुस्तकाकार रूप दे दिया गया है, जो पुस्तक लिखने की जनमान्य विधा के अनुरूप नहीं है, परन्तु यह भी सत्य है, कि वर्तमान में जनमानस में प्रतीकों की अवधारणा कतई स्पष्ट नहीं है, अतएव इस विषय पर बारम्बार लिखा जाना मुझे आवश्यक लगा है। इस सब व्यायाम का एक उद्देश्य और है, कि ***विज्ञान के युग में वैदिक-धर्म को सर्वोच्च पद की मान्यता मिले तथा एक विश्व धर्म की स्थापना हो। अस्तु।***

3. निवेदनः- विद्वान पाठकों से नम्र निवेदन है, कि वे अपनी प्रतिक्रियाएं, संशोधन एवम् सुसम्मतियाँ भेजना न भूलें, इससे मेरे उत्साह में वृद्धि होगी और मुझे लगेगा, कि 'बाल-हठ' भी कभी-कभी पितृवत् पाठकों को प्रिय लग ही जाती है। इस सुकार्य के लिए लेखक आप सभी पाठकों का अग्रिम धन्यवाद करता है और अंत में पुनः गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में ही माँ भवानी और परमपिता भगवान शंकर से आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु निवेदन करता है :-

सपनेहुँ साचेहुँ मोंहिं पर, जौ हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेऊँ सब, भाषा भनिति प्रभाउ॥ [a]

अर्थः- यदि भगवान शंकर एवम् पार्वती जी की स्वप्न में भी मेरे ऊपर सच्ची कृपा हो, तो इस पुस्तक में भाषा द्वारा जो भी विचार व्यक्त किए गये हैं, वे सभी सत्य हो जाएं।

हरिः ॐ तत् सत्!

---

a श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 15